सत्ता / अजय यादव

डराते हैं हमें सत्ता के हुक्मरान
धमकाते हैं खुलेआम ;
क्या लोकतंत्र में सत्ता के हुक्मरानों का यही काम ?

नहीं बोलते हैं जो उनके पक्ष में,
हिंदू लेखक, कलाकार और बुद्धिजीवी
उन्हें सत्ता के हुक्मरान कम्युनिस्ट कहते, कांग्रेसी कहते ।

और जो मुसलमान है,
उन्हें वो पाकिस्तानी कहते, देशद्रोही कहते ।

दागते हैं सवाल जो युवा उनकी नीयत और नीति पर,
दे देते हैं तमगा उन्हें 'टुकड़े-टुकड़े गैंग'
और देशद्रोहियों का।

वो तो यूं पहचान लेते 'टुकड़े-टुकड़े गैंग'
और देशद्रोहियों को उनके कपड़ों से।

अब, तो वो आसानी से पहचानने लगे हैं
बंग्लादेशियों को खाते पोहा देखकर।

ओढकर हुक्मरान हिंदुत्व की नारंगी चादरें,
कराते हैं देश में साम्प्रदायिक दंगें और हत्याएँ।

टुकड़े-टुकड़े करना चाहता है, जलाना चाहता है
देश को इन सम्प्रदायिकता के आग में।

सुन लो ऐ फ़ासीवादी, तानाशाही हुक्मरानों !
देश में जन-क्रांति की नई ज्वाला प्रज्वलित हो चुकी है।
जलाकर भस्म कर देंगें तुम्हारे इन अस्तित्वों को
इन जन-क्रांति की ज्वाला में।

हमार पास कागज नैना!

बोधिसत्व

अब का करबो सरकार!
हमार पास कागज नैना
छान डारा घर औ दुआर
हमार पास कागज नैना!
अब का करबो सरकार!

अब्बा रह गए बिन कागज के
चच्चा चल गए बिन कागज के
बिन कागज दद्दा गए सिधार
हमार पास कागज नैना!
अब का करबो सरकार!

सत्तावन में गरदन कटाई
बिन कागज के गदर मचा दी
हिल गई बिलैती सरकार
हमार पास कागज नैना!
अब का करबो सरकार!

जेहल का डर काहे देखावत
केके तुम हो मुलुक छोड़ावट
हम ना छोड़ब ई गंगा कछार
हमार पास कागज नैना!
अब का करबो सरकार!

केतना राजा केतना नवाब
आए बहि गए नाहीं हिसाब
तोहरऊ उजाड़ होए दरबार
हमार पास कागज नैना!
अब का करबो सरकार!
हमार पास कागज नैना!

यह सप्ताह / दो रास्ते

कोलंबा कालीधर

मनुष्य जीवन जीने के दो रास्ते हैं चिन्ता और चिन्तन। यहाँ पर कुछ लोग चिन्ता में जीते हैं और कुछ चिन्तन में। चिन्ता में हजारों लोग जीते हैं और चिन्तन में दो-चार लोग ही जी पाते हैं। चिन्ता स्वयं में एक मुसीबत है और चिन्तन उसका समाधान। आसान से भी आसान कार्य को चिन्ता मुश्किल बना देती है और मुश्किल से मुश्किल कार्य को चिन्तन बड़ा आसान बना देता है।

जीवन में हमें इसलिए पराजय नहीं मिलती कि कार्य बहुत बड़ा था अपितु हम इसलिए परास्त हो जाते हैं कि हमारे प्रयास बहुत छोटे थे। हमारी सोच जितनी छोटी होगी हमारी चिन्ता उतनी ही बड़ी और हमारी सोच जितनी बड़ी होगी, हमारे कार्य करने का स्तर भी उतना ही श्रेष्ठ होगा।

किसी भी समस्या के आ जाने पर उसके समाधान के लिए विवेकपूर्ण निर्णय ही चिन्तन है। चिन्तनशील व्यक्ति के लिए कोई न कोई मार्ग अवश्य मिल भी जाता है। उसके पास विवेक है और वह समस्या के आगे से हटता नहीं अपितु डटता है। समस्या का डटकर मुकाबला करना आधी सफलता प्राप्त कर लेना है।

"आवश्यकताओं" को मर्यादा से बढ़ा देने का नाम "अतृप्ति" और "दु:ख" है। उन्हें कम कर पूर्ति करने से "सुख" और "सन्तोष" प्राप्त होता है। मनुष्य एक ही प्रकार के सुख से तृप्त नहीं रहता। अत: असंतोष सदैव बना रहता है। वह असंतोष निंदनीय है जिसमें किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए मनुष्य दिन रात हाय-हाय करता रहे और न पाने पर "असंतुष्ट", "अतृप्त" और "दु:खी" रहे।

अपने भविष्य को पूरी शक्ति से अपने भीतर खींचे... अपने वर्तमान को अपनी क्षमता अनुसार रोक कर रखें... अपने भूतकाल को पूरी ताकत से बाहर निकाल दें..... यही है सर्वश्रेष्ठ जीवन योग..

क्रॉनॉलॉजी

सच्ची लघुकथा

1947 में एक आज़ाद भारतीय राष्ट्र अस्तित्व में आया था। तब हम पाकिस्तान से पिछड़ गए थे।

उन्होंने इस्लामी राष्ट्र बना लिया था।

वे उसे और 'पाक' करते गए। पहले बंगाली बोलने वालों को बाहर किया; फिर अहमदियों को। अब शियाओं का भी नम्बर लगा रखा है।

जबकि हम 70 साल से ज्यों के त्यों पिछड़े चले आ रहे थे। लेकिन अब और बर्दाश्त नहीं होगा।

सीएए, हिंदू राष्ट्र बनाने की भूमिका है।

इसलिए नहीं कि यह 'हिंदू' के लिए है। बल्कि इसलिए कि इसमें से 'मुसलमान' नदारद है।

एनआरसी, हिंदू राष्ट्र का घोषणापत्र होगा।

चुन-चुन कर एक-एक को निकाला जाएगा।

इस क्रॉनॉलॉजी को अच्छी तरह समझ लीजिए। हम पाकिस्तान होने जा रहे हैं।

- विकास नारायण राय

बच्चों की फिक्र सरकार को

गीता गैरोला

जब पूरा देश शाहीन बाग में बदल रहा है हमारी सरकारें बड़ी समझदार और संवेदनशील हो गई हैं।

बच्चों की बड़ी फिक्र हो गई उनको।कहते हैं औरतें बच्चे लेकर धरने में जा रही है।वहाँ पर बच्चे नफरत करने सीख रहे है।

जी हां बात तो पते की है

26 जनवरी से पहले कुछ मन की बात करने का मन हो रहा है।

जब औरतें मजदूरी करते समय बच्चों को साथ रखती हैं तब वो क्या सीखते है?

जब घरेलू कामगार औरतें बच्चों को साथ मे रखती है तब वो क्या सीखते हैं?

जब किसान औरतें बच्चों को घर मे रस्सी से बांध कर काम करने जाती हैं,तब वो क्या सीखते है?

जब औरतें घरों में बच्चों को बंद कर रोजगार पर जाती है तब वो अकेले बच्चे क्या सीखते है?

जब खुले आम बच्चों के सामने औरतोँ को पीटा जाता है तब बच्चे क्या सीखते हैं?

जब औरतें बच्चों को पालने के लिए सेक्स वर्कर का काम करती है तब बच्चे क्या सीखते है?

जब औरतें बच्चे गोद मे लेकर भीख मांगती है तब बच्चे क्या सीखते है?

तो महराज एक बात कान में तेल डाल के सुन लो

ये जो बच्चे नारे लगा रहे है,किताबें पढ़ रहे है,चित्र ओर पोस्टर बना रहे है ये सब संविधान में दिए गए लोकतंत्र को पढ़ रहे हैं ,समझ रहे हैं। ये शाहीन बाग में वो सब सीख रहे हैं जिसमे आपकी शिक्षा व्यवस्था फेल हो गई

दुनिया का इतिहास उठा कर देख लीजिये आंदोलनों ने हमेशा पीढ़ियों को बेहतर और समझदार नागरिक दिए है।मैं अनपढ़ केवल चिपको आंदोलन, और नशा नही रोजगार दो आंदोलन के ही उदाहरण दे सकती हूँ।उन आंदोलनों से जुड़े,उनमे शिरक़त करने वाले लोग जहां पर भी है अपना उत्कृष्ट दे रहे हैं।

तो शाहीन बाग के बच्चों की फिक्र छोड़िए और ऊपर जितनी औरतोँ के बच्चो की बात है उनके लिये सारी सुविधाओं से युक्त क्रेश खोलिये।क्रेश बोला है छिचु मंदिल नही।